

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय
वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह
ता:-28-02-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-नवमः पाठनाम सत्सङ्गतिः

पाठ्यांश -

माता - वत्स! त्वं तु योग्यः असि।शास्त्रस्य अयमपि निर्देशः अस्ति यत्

विद्ययालङ्कृतः अपि दुर्जनः परिहर्तव्यः। उक्तं च -

दुर्जनः परिहर्तव्यः विद्ययालङ्कृतोऽपि सन् ।

मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः॥

पुत्रः- अनुगृहीतोऽपि मातः।सत्सङ्गतेः महत्त्वं विज्ञाय आत्मनःकल्याणाय

च प्रयत्नेन सत्सङ्गतिः एव करणीया ।

शब्दार्थः-

अयमपि - यह भी , विद्ययालङ्कृत - विद्या से विभूषित

परिहर्तव्यः - त्याग करने योग्य है , किमसौ - क्या वह भी

अनुगृहीतोऽस्मि - कृतज्ञ हूं , विज्ञाय - जानकर

अर्थ-

माता- पुत्र!तुम तो योग्य हो।शास्त्र का भी निर्देश है कि विद्या से

विभूषित दुष्ट भी त्याग करने योग्य है।और कहा गया है-

विद्या से आभूषित दुष्ट लोग भी त्याग करने योग्य है। मणि से

विभूषित सांप क्या भयंकर नहीं होता है।

पुत्रः- मा मैं आपका कृतज्ञ हूं।सत्संगति

के महत्त्व को जानकर अपने कल्याण के

लिए और प्रयत्न से सत्संगति ही करना चाहिए।